मशीनों द्वारा संचालित मानव और "जूजू" कहानी

डॉ. चित्रा

सहायक प्रोफेसर
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय
जयपुर
मो- 9023309178
Chitra.14_singh@yahoo.com

आज समाज में बदलाव बहुत तेज गति से आ रहा है। यह विकास इतना तेज है कि रात को खेत में लगायी गई सब्जी सुबह बाजार में बिकने के लिए आ जाती है। आज बने रिश्ते कल अंजान से लगनेलग जाते है। मनुष्य की आत्मकेंद्रिता एवं उसकी महत्वकांक्षा ने सबकुछ खोखला करके रख दिया है। जिस तकनीक को मनुष्य ने अपनी सहूलियत के लिए बनाया था उसी तकनीक ने मनुष्य को गुलाम बना दिया है। पहले मशीनों का संचालन मनुष्य द्वारा संभावित था परन्तु आज मनुष्य मशीनों द्वारा संचालित है। इस तकनीक ने आज हर घर में अपने पांव जमा लिए है। रसोईघर से लेकर शयनकक्ष तक मशीनों का हर जगह राज है। चाहे कोई बुजुर्ग हो, महिला हो या छोटा बच्चा हर कोई सुई से लेकर बड़ी बड़ी मशीनों तक पूरी तरह से तकनीक पर निर्भर हो गया है।

आज के समाज में मोबाइल की उपयोगिता पेट भरने वाली जरूरतों के बराबर है। खान-पान की तरह ही मोबाइल भी मनुष्य की जरुरी आवश्यकताओं में शामिल हो चुका है। मोबाइल फ़ोन का मूल मंत्र है 'कर लो दुनिया मुट्ठी में'। छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल फ़ोन में गेम और टी. वी. में कार्टून के रूप में पूरी दुनिया सिमट गयी है। परन्तु यह आवश्यक नहीं की बच्चे को यह आदत स्वयं से लग जाए बल्कि कई बार यह आदत बच्चे को जबरदस्ती अभिभावकों के द्वारा भी लगा दी जाती है। अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिए, बच्चों को खुद से दूर रखने के लिए उनके हाथ में फ़ोन थमा दिया जाता है या टी.वी. में कार्टून चला कर उसके आगे उन्हें बैठा दिया जाता है। टी. वी. के आगे बैठा कर माता-पिता अपने कामों में व्यस्त हो जाते है। ऐसा ही एक चित्र हमें एस. आर. हरनोट की 'जू जू' कहानी में देखने को मिलता है।

एस. आर. हरनोट चनगाँव, शिमला, हिमाचल प्रदेश के रहने वाले है जिन्होंने समाज के हर उपेक्षित पात्र के लिए कलम चलाई है। कहानी के अंतर्गत शर्मा जी का यह पहला बच्चा है जो ज्योतिष से शुभ भाग्यशाली मुहूर्त निकलवाकर हुआ था और महंगाई के चलते उनमें दूसरे बच्चे की कोई गुंजाईश भी नहीं थी परन्तु पहला बच्चा होने के कारण उसे जो प्रेम और स्नेह मिलना चाहिए वह उससे वंचित था। 'जू जू' कहानी में एक साल नौ महीने का बच्चा कहानी का उपेक्षित पात्र है जो माँ-बाप के प्यार से वंचित सारे दिन टी. वी के सामने बैठा रहता था। आज के समय में बच्चे का जन्म बाद में होता है परन्तु वह पहले ही मशीनों के वातावरण में प्रवेश कर जाता है। बच्चों के आसपास हर जगह मशीनरी देखने को मिलती है। उनका हर खिलौना मशीन से संचालित है जिसका वर्णन इस कहानी में मिलता है "बच्चा नकली एके-47 से खेलता जिससे नकली गोलियां भी चलती, रोबोट, रिमोट वाली गाड़ी, जहाज वाले खिलोनों से उसके पिता उसे खिलाने का प्रयास कर रहे थे परन्तु वह तब भी चुप नही होता।" *(पृष्ठ-89)* जैसे-जैसे गोलिया चलती बच्चा उतनी ही तेजी से रोने लगता। इस माहौल से उपहार के रूप में बच्चों के अन्दर उत्तेजना का भाव घर कर रहा है। उनकी सुनने समझने की शक्ति समाप्त होती जा रही है। जिसके कारण हमारे समाज में मानवीय मूल्यों में गिरावट आ रही है।

पैकेट बंद खाने ने बाजार में अपने पैर इस कदर जमा लिए है कि मिसेज शर्मा बच्चों को भी बाहर का दूध देनी लगी है। दूध के आलावा बच्चो को बचपन से ही चिप्स, चॉकलेट, टाफी की आदत डाल दी जाती है जिससे उन्हें ना पोषण मिलता है बल्कि दूध के दांत टूटने से पहले ही सड़ जाते है। छोटे-छोटे बच्चों की आँखों पर बड़े-बड़े चश्में लग जाते है। इन आदतों का परिचय हमें इस कहानी में भी देखने को मिलता है "बच्चे को माँ के दूध की आदत ना पड़े इसलिए उससे बचने के लिए उसे बाजार के दूध की बोतल, विभिन्न तरह की चॉकलेट जैसे केडबरी, मिल्कबार, किटकेट, फाइव स्टार, मंच आदि की आदत डाल दी जाती है।" (पृष्ठ-90) इसका मुख्य परिणाम यह होता है कि बच्चों में बचपन से ही पोषण के अभाव में रोगों से लड़ने की शक्ति नहीं रहती और वह बिमारियों का घर बन जाते है।

बच्चे के शोर-शराबे, व बार-बार संभालने से बचने के लिए अभिवावक बच्चों से पीछा छुड़ाने के लिए उन्हें किसी ना किसी तरह व्यस्त कर देते है ताकि वह किसी भी तरह अभिवावकों से दूर रहे। ऐसा ही है एक बेमिसाल उपाय जो मिसेज शर्मा इस कहानी में करती है "इसके लिए उसने एक बढ़िया उपाय तलाश लिया था। वह बच्चे को सोफे पर बिठा देती और सामने रखे टी.वी. को ऑन कर देती। कार्टून का कोई चैनल लगाए रखती। धीरे-धीरे बच्चे का ध्यान खिलौने और दूध की तरफ कम और टीवी स्क्रीन पर ज्यादा रहने लगा था। मिसेज शर्मा अब निश्चिंत होकर अपने बाहर-भीतर के काम निपटाती। यहां तक की अब वह घंटों पड़ोस की औरतों के साथ गप्पें मार सकती। ब्यूटी पार्लर जा सकती थी। यहाँ तक कि कभी-कभी सहेलियों के साथ फिल्म भी देख आती थी। पर आने पर बच्चा उसे वहीँ बैठा, हंसता-खेलता मिलता।"(पृष्ठ-90) लेखक ने आज की इस स्थिति का उस समय के साथ तुलनात्मक अधयन्न किया है जब स्त्रियाँ घर, बच्चों के साथ-साथ खेत और पशुओं का भी काम किया करती थी। यहाँ इस कहानी में मिसेज शर्मा के सारे प्रयत्न बच्चे को

किस तरह व्यस्त रखा जाए इसी में रह जाते है जैसे बच्चे को अफीम खिला दी जाए जिससे वो आराम से सो जाए या बच्चे को किस तरह बेल्ट से बांध कर सोफे पर बैठाया जाए ताकि वह गिरे नहीं। उसे इतना व्यस्त कर दो की उसका हग्गिस ख़राब या गिला होने पर भी बच्चा कोई प्रतिक्रिया न करे बल्कि मस्त रहे और इस तरह टी. वी. ने अफीम का काम करना शुरू कर दिया ।

इन सबका परिणाम क्या होगा यह अभिवावकों ने खुद भी नही सोचा होगा "जब उसे वहां अपनी मनभावन कोई चीज नहीं दिखती तो रोने लग जाता। आँखे बंद करके चीखने लगता। पागलों जैसी हरकतें करता। फिर इधर-उधर ताकता। भागने की कोशिश करता। घुटनों के बल बाहर-भीतर दौड़ने लगता। कुर्सी, मेज, सोफे और चारपाई के सहारे रेंगता हुआ कभी गिरता तो कभी संभलकर फिर रोता हुआ सरकने लगता।" (पृष्ठ-89) अभिवावकों को लगता है कि बच्चे को कोई परेशानी हो रही है तभी वो ऐसा बरताव कर रहा है। वह उसे डॉक्टर के पास लेकर जाते है पहले तो डॉक्टर को उसकी परेशानी समझ नही आती इतने में टी. वी. में जू जू का विज्ञापन आने लगता है और वह छोटा बालक जू जू को देखकर हंसने लगता है। तभी डॉक्टर को उसकी परेशानी और साथ ही दवा दोनों समझ में आ जाती है और डॉक्टर एक पर्ची मे शर्मा जी को लिख के देता है "शो हिम जूजू एंड गेट यूअर चाइल्ड ओके।"(पृष्ठ-95) जिन शर्मा जी को बच्चे के हंसने पर खुश होना चाहिए था वह अब सिर पकड़ कर बैठे थे।

सन्दर्भ ग्रंथ:

1. एस. आर. हरनोट, लिट्टन ब्लाक गिर रहा है, आधार प्रकाशन, दिल्ली, 2014.